राम की कथा कही गयी है। इसके साथ ही इसमें पूर्वापर का सम्बन्ध भी है। जैसे साथ काण्डों में यह काव्य बँटा हुआ है किन्तु सबके सब एक दूसरे से सम्बद्ध हैं। पहले बालकाण्ड है पुनः अयोध्या काण्ड और अंत में उत्तरकांड। इसके सुसंगत अर्थ को प्राप्त करने के लिए बालकांड से उत्तरकांड की ओर बढ़ना चाहिए। यदि यह क्रम भंग हुआ तो अर्थों में तथा कथा में संगति नहीं रह पायेगी। यही पूर्वापर का सम्बन्ध हुआ। इसका अनुपालन प्रबंध काव्य की अनिवार्य शर्त है। ऐसा नहीं होने पर प्रबंध काव्य की स्थिति समाप्त हो जायेगी।

मुक्तक काव्य

मुक्तक काव्य मोती के समान मुक्त होते हैं। इनमें पूर्वापर का सम्बन्ध नहीं होता। ये अपने आप में पूर्ण होते हैं; स्वतन्त्र होते हैं। इसके अर्थ की संगति के लिए ऊपर या नीचे के प्रसंगों की आवश्यकता नहीं होती।

उदाहरणार्थ कोई भी गीत इसमें पूर्णतः प्रमाणित करता है उसमें किसी अन्य प्रसंग की आवश्यकता नहीं होती। गीत जितना छोटा या बड़ा हो उसी में उसकी सारी अर्थवत्ता एवं प्रभाव छिपा होता है। उससे इतर किसी भी पंक्ति या प्रसंग से वह सर्वथा असम्बद्ध होता है अतः वह गीत अपने आप में पूर्ण होता है अतः उसे पढ़ या सुन लेने से हमें तृप्ति हो जाती है किसी अन्य प्रसंग की अपेक्षा उसमें नहीं होती। एक और उदाहरण लें — कबीर के दोहे हमारे पाठ्यक्रम में हैं जिनकी संख्या दस है। सारे दोहों के अर्थ अलग-अलग हैं। ये दोहे अपने आप में पूर्ण हैं। यदि हम दोहे के क्रम को विशृंखलित भी कर दें तब भी उनके अर्थ में विसंगति नहीं आती। क्योंकि दोहे अपने आप में पूर्ण हैं। जबकि प्रबंध काव्य में ऐसी सुविधा नहीं है। वहाँ तो कथात्मक सूत्र ऊपर और नीचे से इस तरह से गुंफित होते हैं

क्षणिकाओं की अनुभूति क्षणिक होती है टिकाऊ नहीं होती। इसमें चमत्कार की प्रधानता होती है साथ ही विषय की कोई सीमा नहीं होती।

सच पूछा जाये तो मुक्तक काव्य की सीमा असीम होती है। सूर की पदावली, कबीर के दोहे बिहारी सतसई जैसी रचना मुक्तक काव्य के ही अन्तर्गत आती है। थोड़ा आगे बढ़कर कहें तो प्रबंधकाव्य के अतिरिक्त जितने भी काव्य रूप हैं सब मुक्तक हैं।

पिछले वर्गों में हमने काव्य या कविता की विभिन्न विधाओं के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की। आगे हम गद्य साहित्य के विभिन्न रूपों या विधाओं पर प्रकाश डालने का प्रयास करेंगे।

उपन्यास- उपन्यास गद्य की एक नवीन विधा है। अंग्रेजों के आगमन के बाद उनका साहित्य भी आया जिसमें एक नॉवेल नाम की विधा थी जो हिन्दी में उपन्यास के रूप में स्वीकृत हुई। उपन्यास में मानव जीवन को सम्पूर्णता में चित्रित करने का प्रयास किया जाता है। प्रेमचन्द की परिभाषा उल्लेखनीय है- उपन्यास को मैं मानव चरित्र का चित्र मात्र समझता हूँ। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना इसका प्रधान कार्य है। उपन्यास का गद्य साहित्य में वही स्थान है जो महाकाव्य का काव्य साहित्य में स्थान है। अर्थात् उपन्यास में नायक के सम्पूर्ण जीवन को चित्रित किया जाता है इसका फलक बड़ा ~~विशि~~ विशाल होता है। इसमें समाज की विभिन्न परम्पराओं, जीवन शैलियों तथा विभिन्न रूपों का सामंजस्य पूर्ण अंकन होता है इसमें एक ही साथ अनेक कथायें चल सकती हैं किन्तु उनका पर्यवसान मूलकथा में ही होता है।

कहानी :- कहानी भारतीयों के लिए कोई नई विधा नहीं है किन्तु यह कहानी मूलतः आधुनिक कहानी है जिसका